स शापो न त्वया राजन्न च सारथिना श्रुतः ।

नदत्याकाशगङ्गाया स्रोतस्युद्दामदिग्गजे ।।78।।

अन्वय राजन् ! उद्दामदिग्गजे आकाशगंगायाः स्रोतसि नदति (सति) स शापः न त्वया न च सारथिना श्रुतः।

अनुवाद हे राजन्, कामधेनु का दिया हुआ वह शाप न तो तुमने और व ही तुम्हारे सारथि ने सुना क्योंकि बन्धन से मुक्त (होकर गंगा के जलप्रवाह में स्नान के लिए आए) दिग्गजों से युक्त आकाशगंगा का जलप्रवाह कोलाहल कर रहा था।

टिप्पणियाँ

प्रस्तुत श्लोक की दूसरी पंक्ति की रचना ध्यान देने योग्य है। उद्दामदिग्गजे आकाशगंगाः स्रोतसि नदति (सति) यहां 'भावे सप्तमी' है जिसे 'सति सप्तमी' भी कहते हैं। 'जब ऐसा हो रहा था' इस प्रकार के अर्थ को सूचित करने के लिए भावे सप्तमी का प्रयोग होता है जब आकाशगंगा का जलप्रवाह कोलाहल कर रहा था।

उद्दामदिग्गजे दाम्नः उद्गताः इति उद्दामानः (प्रादिसमास), उद्दामानः दिग्गजाः यस्मिन् (स्रोतसि) तत् उद्दाम दिग्गजं तस्मिन् (बहुव्रीहि) स्रोतसि का विशेषण, जो सप्तमी विभक्ति एकवचन में है। वह स्रोत (जलप्रवाह) जिससे मद से मत्त या उच्छृंखल दिशाओं के हाथी चिंघाड़ रहे थे। दिशाओं के रक्षक हाथी दिग्गज कहलाते हैं। वे आठ हैं : (1) ऐरावत, पूर्व में इन्द्र का हाथी, (2) पुण्डरीक, दक्षिण-पूर्व में अग्नि का हाथी, (3) वामन, दक्षिण में यम का, (4) कुमुद, दक्षिण-पश्चिम में सूर्य का, (5)

अञ्जन, पश्चिम में वरुण का, (6) पुष्पदन्त, उत्तर-पश्चिम में वायु का, (7) सार्वभौम, उत्तर में कुबेर का, (8) सुप्रतीक, उत्तर-पूर्व में सोम का। देखिए,

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।

पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजः ।। (अमरकोश)

स्रोतसि प्रवाह पर, ''यस्य च भावेन भावलणम्'' से सप्तमी।